संस्कृति IAS

इतिहास

वैकल्पिक विषय

द्वारा

श्री अखिल मूर्ति

इतिहास
दृष्टिकोण एवं रणनीति

1. विषय का चयन

संघ लोक सेवा आयोग (UPSC) की सिविल सेवा परीक्षा एवं राज्य लोक सेवा आयोगों की पी.सी.एस. परीक्षाओं में सफलता के लिये प्रमुख चरण है– सही वैकल्पिक विषय का चयन। सही वैकल्पिक विषय का चयन सफलता के मार्ग को आसान बना देता है, अत: वैकल्पिक विषय के चयन में विशेष सावधानी बरतने की आवश्यकता होती है। वैकल्पिक विषय का चयन करते समय निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना अत्यावश्यक है–

- विषय के अध्ययन के लिये किसी विशेष 'दक्षता' या डिग्री की आवश्यकता न हो, अर्थात् विषय की प्रकृति विशेषीकृत न होकर सामान्यीकृत हो।
- विषय की अध्ययन-सामग्री आसानी से उपलब्ध हो।
- विषय सामान्य अध्ययन की तैयारी में भी सहायक हो।
- विषय परीक्षा की दृष्टि से सुरक्षित (Safe) अथवा न्यूनतम जोखिम वाला, अंकदायी एवं चयन में सहायक हो।
- विषय के अध्ययन में 'भाषा' का महत्त्व नगण्य हो, अर्थात् हिंदी और अंग्रेज़ी दोनों भाषाओं के परीक्षार्थियों के लिये समान हो।
- विषय रुचिकर हो। किंतु, यहाँ इस बात का ध्यान रखना आवश्यक है कि यदि 'रुचिकर' और 'अंकदायी' में प्राथमिकता की बात आए, तो 'अंकदायी' होने को प्राथमिकता देकर विषय का चयन करना चाहिये।
- विषय में सफलता का प्रतिशत अधिक हो।

2. इतिहास : एक श्रेष्ठ वैकल्पिक विषय

सिविल सेवा (मुख्य) परीक्षा के लिये वैकल्पिक विषय के चयन हेतु ऊपर जिन बातों पर चर्चा की गई है, वे सभी इतिहास के संदर्भ में पूरी तरह से लागू होती हैं, जैसे–

- इतिहास एक ऐसा विषय है जिसके साथ मुख्य परीक्षा में सर्वाधिक उम्मीदवार सफल होते हैं।
- वैकल्पिक विषय के रूप में इतिहास का अध्ययन करने के लिये यह आवश्यक नहीं है कि आपने अकादमिक स्तर पर इसकी पढ़ाई की हो; कला/विज्ञान अथवा वाणिज्य में से किसी भी संकाय के विद्यार्थी वैकल्पिक विषय के रूप में इतिहास का चयन करके अच्छे अंक प्राप्त कर सकते हैं। चूँकि इसमें जटिल सैद्धांतिक पक्षों का अभाव है, अत: कोई भी सामान्य विद्यार्थी आसानी से इतिहास की तैयारी कर सकता है।
- सामान्य अध्ययन के एक सहायक विषय के रूप में 'इतिहास' की भूमिका अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। प्रारंभिक परीक्षा में, सामान्य अध्ययन में लगभग 18-20 प्रश्न इतिहास खंड से ही पूछे जाते हैं।
- वर्तमान परीक्षा पैटर्न में, सामान्य अध्ययन के प्रश्नपत्र में इतिहास खंड से इस तरह के प्रश्न पूछे जाते हैं कि 'इतिहास' से इतर वैकल्पिक विषय वाले उम्मीदवारों के लिये इन प्रश्नों को हल करना तुलनात्मक रूप से कठिन होता है, जबकि इतिहास के विद्यार्थियों के लिये इनके उत्तर देना आसान होता है।
- इतिहास एक ऐसा विषय है जो हिंदी और अंग्रेज़ी दोनों ही माध्यमों के उम्मीदवारों के लिये समान रूप से अंकदायी है।
- वैकल्पिक विषय इतिहास के प्रथम प्रश्नपत्र में मानचित्र आधारित प्रश्न पूछे जाते हैं, अत: इस प्रश्नपत्र में 160-170 अंक आसानी से प्राप्त किये जा सकते हैं।
- सामान्य अध्ययन (मुख्य परीक्षा) के प्रथम एवं द्वितीय प्रश्नपत्र में प्रत्यक्ष व परोक्ष रूप से इतिहास खंड की 250 से अधिक अंकों की भूमिका देखी जा सकती है। प्रथम प्रश्नपत्र में इतिहास, कला एवं संस्कृति जहाँ प्रत्यक्ष रूप से इतिहास का हिस्सा हैं, वहीं द्वितीय प्रश्नपत्र में अंतर्राष्ट्रीय संबंध खंड की समझ विकसित करने और तैयारी में इतिहास की महती भूमिका है। इस प्रकार, प्रारंभिक एवं मुख्य परीक्षा दोनों में ही इतिहास विषय के परीक्षार्थी लाभप्रद स्थिति में रहते हैं।
- इतिहास में भारत सहित विश्व के महान व्यक्तियों एवं उनके कार्यों का अध्ययन किया जाता है। यह अध्ययन उम्मीदवारों के व्यक्तित्व के विकास में महती भूमिका निभाता है।
- सबसे महत्त्वपूर्ण बात यह है कि इतिहास एक भरोसेमंद विषय है। आपके प्रयास व प्रस्तुति के अनुपात में आपको उचित अंक अवश्य मिलते हैं। अत: अंक के स्तर पर यह विषय आपको धोखा देने वाला नहीं है।

3. इतिहास विषय से जुड़े कुछ मिथक

- इतिहास तथ्यों का संकलन है और इन तथ्यों को याद करना दुष्कर कार्य है।

- इतिहास का पाठ्यक्रम बहुत लंबा है, अत: इसे पूरा पढ़ पाना और याद करना असंभव है।
- इतिहास में अनेक विचारधाराएँ हैं और उन विचारधाराओं पर विवाद की स्थिति है। अत: इस बात को लेकर एक जटिलता बनी रहती है कि किस विचारधारा के आधार पर इतिहास पढ़ा और लिखा जाए, ताकि परीक्षक प्रसन्न होकर अच्छे अंक दे सके?
- इतिहास को समझने के लिये इसका अकादमिक अध्ययन ज़रूरी है।

4. उपर्युक्त धारणाएँ विशुद्ध भ्रम हैं, क्योंकि...

- भ्रम अज्ञानता से उत्पन्न होता है। जब यह अज्ञानता किसी विषय से संबंधित होती है, तो उस विषय के संदर्भ में भ्रम होना स्वाभाविक है। अत: भ्रम के निवारण हेतु उस विषय के संदर्भ में सही ज्ञान का होना आवश्यक है और सही ज्ञान योग्य मार्गदर्शक द्वारा ही संभव है।
- इतिहास में अधिक तथ्य अवश्य हैं, किंतु इनमें से अधिकांश तथ्य किसी-न-किसी अवधारणा या घटनाक्रम से जुड़े होते हैं और अवधारणा या घटनाक्रम के साथ जोड़कर तथ्यों को याद रखना बहुत आसान होता है।
- जहाँ तक विचारधाराओं की बात है, तो विचारधाराएँ केवल इतिहास में ही नहीं, बल्कि लगभग हर विषय में होती हैं, जैसे– हिंदी साहित्य में आचार्य रामचंद्र शुक्ल तथा हजारी प्रसाद द्विवेदी आदि की विचारधाराएँ। इसी प्रकार, दर्शनशास्त्र में ब्रह्म, जीव, जगत के संबंध में शंकराचार्य, रामानुजाचार्य एवं मध्वाचार्य आदि की विचारधाराएँ। विचारधाराओं के संबंध में कुछ बातें समझ लेना आवश्यक है–
  (i) विचारधाराओं की अधिकता विषय की समझ को विकसित करने में सहायक होती है, बाधक नहीं।
  (ii) विचारधाराओं के कारण विषय के प्रति हमारा दृष्टिकोण व्यापक एवं तार्किक हो जाता है और बातों को देखने-समझने का नज़रिया वैज्ञानिक हो जाता है।
  (iii) सिविल सेवा परीक्षा के उम्मीदवारों के लिये यह जानना ज़रूरी है कि उन्हें अच्छे अंक विषय के ज्ञान व उसके तार्किक एवं क्रमबद्ध प्रस्तुतीकरण के आधार पर मिलते हैं, न कि किसी एक खास विचारधारा को अपनाकर परीक्षक को प्रसन्न करके।
- इतिहास को पढ़ने और समझने के लिये अकादमिक अध्ययन की बात एकदम निर्मूल है, क्योंकि प्रतिवर्ष विज्ञान वर्ग के अनेक अभ्यर्थी इस विषय को लेकर अच्छे अंक प्राप्त करते हैं।
- जहाँ तक पाठ्यक्रम के विस्तृत होने की बात है, तो यह सही है कि देखने में यह विस्तृत है, किंतु गौर से देखें तो बहुत से बिंदुओं का स्पष्ट अंकन करने के कारण पाठ्यक्रम लंबा हो गया है। यदि इन बिंदुओं को क्रमबद्ध एवं वैज्ञानिक पद्धति से संयोजित करके अध्ययन किया जाए, तो पाठ्यक्रम का आकार काफी छोटा हो जाता है।
- जहाँ तक पाठ्यक्रम को पूरा पढ़ने और याद करने की बात है तो यह अध्यापक पर निर्भर करता है कि पाठ्यक्रम को किस ढंग से समग्रता के साथ व्यवस्थित कर आपके लिये सहज व स्मरणीय बना सके। पाठ्यक्रम के संदर्भ में और अधिक चर्चा पाठ्यक्रम संबंधी विश्लेषण के बिंदुओं के अंतर्गत की गई है।
- अंत में, कम अंकों की प्राप्ति विषय की नहीं, बल्कि व्यक्तिगत समस्या है। यदि विषय की प्रकृति के कारण कम अंक मिलते, तो फिर कई अभ्यर्थियों के 300 से ज़्यादा अंक कैसे आते? मूल बात यह है कि प्रारंभिक परीक्षा में उत्तीर्ण होने के बाद मुख्य परीक्षा में शामिल होने वाले उम्मीदवार तथ्यों की जानकारी के स्तर पर लगभग समान होते हैं। इन उम्मीदवारों में अच्छे अंक वही प्राप्त कर पाते हैं जो प्रश्नों के उत्तर नियत समय व निर्धारित शब्द-सीमा में तथा विषयवस्तु को क्रमबद्ध, आकर्षक शैली और सहज भाषा के साथ लिखते हैं। वस्तुत: अधिकतम अंकों की प्राप्ति तो सम्यक् मार्गदर्शन पर निर्भर करती है।

5. पाठ्यक्रम तथा परीक्षा प्रणाली का विश्लेषण

मुख्य परीक्षा की प्रकृति

- मुख्य परीक्षा के पाठ्यक्रम और रणनीति पर विचार करने से पूर्व परीक्षा की प्रकृति पर चर्चा करना न सिर्फ वांछनीय है, अपितु अनिवार्य भी है। मुख्य परीक्षा में सफलता तभी मिल सकती है जब इसकी प्रकृति को सही तरह से समझ लिया जाए।
- मुख्य परीक्षा का उद्देश्य उम्मीदवार के अभिव्यक्ति कौशल का परीक्षण करना है। चूँकि उम्मीदवार के ज्ञान व स्मृति (याद रखने की क्षमता) का परीक्षण प्रारंभिक परीक्षा में हो चुका होता है, अत: मुख्य परीक्षा में विषयवस्तु के प्रस्तुतीकरण, लेखन-शैली, दृष्टिकोण व विषय की समझ को परीक्षण प्रक्रिया के केंद्र में रखा जाता है।
- इसी प्रकृति को न समझने के कारण अधिकांश उम्मीदवार केवल तथ्यों और उनके विश्लेषण को रटते रहते हैं, परिणामस्वरूप परीक्षा में बहुत कम अंक प्राप्त कर पाते हैं।
- प्राय: देखा गया है कि कई उम्मीदवार कठिन परिश्रम करते हुए बहुत सारी पाठ्य-सामग्री का अध्ययन करते हैं, फिर भी कम अंक प्राप्त कर पाते हैं। वहीं, कुछ उम्मीदवार तुलनात्मक रूप से कम समय व परिश्रम में भी अच्छे अंक प्राप्त कर लेते हैं। इस अंतर का मूल कारण मुख्य परीक्षा की प्रकृति में ही निहित है।

  अत: मुख्य परीक्षा में अधिकतम अंक प्राप्त करने के लिये इसकी प्रकृति के अनुरूप प्रस्तुतीकरण, लेखन-शैली एवं विषय की समझ पर विशेष बल देने की आवश्यकता है।

परीक्षा प्रणाली का विश्लेषण

- वर्ष 2013 से यू.पी.एस.सी. ने सिविल सेवा मुख्य परीक्षा के पाठ्यक्रम में परिवर्तन करते हुए प्रत्येक वैकल्पिक विषय के लिये 500 अंक निर्धारित कर दिये हैं। प्रत्येक वैकल्पिक विषय में 250-250 अंकों के दो प्रश्नपत्र होते हैं।
- वर्ष 2013 से विशेषकर वैकल्पिक विषय में प्रश्नों के अंक व उत्तर की शब्द-सीमा में भी बदलाव आया है। वस्तुत: 60 अंक के एक प्रश्न की बजाय अब 15-15 एवं 20 अंक (कुल अंक 50) के तीन प्रश्न भी पूछे जा रहे हैं। ऐसे बदलाव का उद्देश्य है परीक्षार्थी की समझ और समग्र अध्ययन की क्षमता का आकलन करना। अत: अब चयनात्मक अध्ययन और भी खतरनाक हो गया है।
- प्रश्नों की प्रकृति में किया गया यह बदलाव अंक प्राप्ति की दृष्टि से सकारात्मक है। इसलिये, अच्छे अंक प्राप्त करने के लिये पाठ्यक्रम का समग्र अध्ययन अपरिहार्य हो गया है।
- वैकल्पिक विषय 'इतिहास' के प्रथम प्रश्नपत्र का पहला प्रश्न 50 अंकों का एवं मानचित्र पर आधारित होता है। इसमें मानचित्र पर स्थान-विशेष को चिह्नित कर लगभग 30 शब्दों में उसका विवरण देना होता है। मानचित्र पर स्थान अंकित रहता है और उसकी पहचान कर विवरण लिखना होता है। इस तरह के 20 स्थान अंकित रहते हैं, जिनमें से प्रत्येक 2.5 अंकों का होता है। इस प्रश्न में थोड़े से प्रयास से 40 अंक तक प्राप्त किये जा सकते हैं।
- प्रश्नपत्र एक के खंड 'ख' में पाँच टिप्पणियाँ होती हैं। परीक्षार्थियों को इन सभी का उत्तर देना होता है। प्रत्येक टिप्पणी 10 अंकों की होती है और इसे लगभग 150 शब्दों में लिखना होता है। इन टिप्पणियों में भी अंक प्राय: गणितीय पद्धति के अनुरूप ही मिलते हैं, अर्थात् सटीक टिप्पणी लेखन से प्रत्येक में 6-8 अंक तक प्राप्त किये जा सकते हैं। इस प्रकार, टिप्पणी वाले प्रश्नों में भी 30-40 अंक प्राप्त किये जा सकते हैं।
- अब बात लघु उत्तरीय प्रश्नों की आती है। प्रथम प्रश्नपत्र के दोनों खंडों को मिलाकर 9 लघु उत्तरीय प्रश्न होते हैं, जिनमें से दोनों खंडों को मिलाकर कुल तीन प्रश्नों के उत्तर लिखने होते हैं। प्रत्येक प्रश्न के तीन उपखंड (a, b एवं c) होते हैं जो क्रमश: 15, 15 एवं 20 अंकों के होते हैं, अर्थात् ये तीनों प्रश्न कुल 150 अंकों के होते हैं।
- इसी प्रकार, द्वितीय प्रश्नपत्र में भी दोनों खंडों को मिलाकर 10 टिप्पणियाँ लिखनी होती हैं (प्रत्येक 10 अंक)। इसमें भी 60-70 अंक प्राप्त किये जा सकते हैं।
- परिवर्तन के दौर में यह भी संभव है कि प्रश्नों की खंडवार सीमा अब टूट जाए, अर्थात् प्रथम प्रश्नपत्र में (a) प्राचीन भारतीय इतिहास का प्रश्न हो, तो (b) मध्यकालीन इतिहास से संबंधित। इसी प्रकार, द्वितीय प्रश्नपत्र में (a) आधुनिक भारतीय इतिहास से संबंधित हो, तो (b) विश्व इतिहास से संबंधित। अत: अब परीक्षार्थी को ऐसे संभावित बदलाव को ध्यान में रखकर तैयारी करनी चाहिये।

प्रश्नों का चयन

- जहाँ तक बात प्रश्नों के चयन की है, इस संबंध में किसी भी प्रकार का पूर्वाग्रह रखना अत्यंत जोखिमपूर्ण हो सकता है। यह पूर्वाग्रह इस बात को लेकर है कि प्रथम प्रश्नपत्र के खंड 'क' से 3 तथा खंड 'ख' से 2 प्रश्न करने चाहियें। इसी प्रकार, द्वितीय प्रश्नपत्र के खंड 'क' से 2 व खंड 'ख' से 3 प्रश्न करने चाहियें।
- यद्यपि खंडों के चयन में इस प्रकार का पूर्वाग्रह रखना उचित नहीं है, क्योंकि यह रणनीति आपको अनिवार्य रूप से चयनात्मक होने को मजबूर करती है। समस्या तब जटिल हो जाती है जब आपको चुने हुए खंड में ऐसे प्रश्न का उत्तर लिखना पड़ जाए जिसके प्रति आपकी समझ गहरी नहीं है। ऐसी स्थिति में आप पूरी प्रतियोगिता से बाहर होने के लिये अभिशप्त हो जाएँगे। इस स्थिति से बचने का एक ही तरीका है कि आप किसी निर्मूल धारणा के प्रति पूर्वाग्रही न बनें।
- प्राय: परीक्षा में पूछे गए प्रश्नों की प्रकृति आत्मनिष्ठ (Subjective) तथा वस्तुनिष्ठ प्रकार की होती है। जिन प्रश्नों के उत्तर में वस्तुनिष्ठता (Objectivity) की अपेक्षा हो उनमें अधिक अंक मिलते हैं। उदाहरण के लिये-"इतिहास को जानने के विभिन्न स्रोतों का वर्णन कीजिये।" "सिंधु सभ्यता में नगरीकरण के तत्त्वों का उल्लेख करते हुए नगर-निर्माण योजना की विशेषताएँ बताइये।" "फ्राँस की क्रांति के कारणों का वर्णन कीजिये" आदि।
- इस प्रकार, सर्वप्रथम उन प्रश्नों के उत्तर लिखने को प्राथमिकता देनी चाहिये जिनकी प्रकृति वस्तुनिष्ठ प्रकार की हो। इसके बाद आत्मनिष्ठ प्रकृति के प्रश्नों में उन प्रश्नों का चयन करना चाहिये जिनमें विवाद की गुंजाइश कम हो और जो तुलनात्मक अध्ययन पर आधारित हों।

6. परीक्षा की तैयारी

कार्य-योजना बनाना

- सिविल सेवा परीक्षा में सफल होने के लिये एक सटीक, योजनाबद्ध और वैज्ञानिक पद्धति पर आधारित कार्य-योजना की नितांत आवश्यकता होती है।

- इस कार्य-योजना में आवश्यक संसाधन (Resources), सही रणनीति (Strategy), समयानुकूल पर्यवेक्षण (Supervision), सम्यक् निष्पादन (Execution) और तय समय-सीमा (Time Schedule) जैसे मूलभूत तत्त्व शामिल होते हैं। कार्य-योजना में समय प्रबंधन सबसे महत्त्वपूर्ण होता है, अर्थात् आपको यह पता होना चाहिये कि क्या करना है, कब तक करना है, कैसे करना है, कितना करना है? समय प्रबंधन किसी भी उम्मीदवार की सफलता का महत्त्वपूर्ण घटक है।
- मुख्य परीक्षा की तैयारी का अर्थ है– सही रणनीति के साथ पाठ्यक्रम का अध्ययन और उस अध्ययन की तार्किक एवं समुचित अभिव्यक्ति।

आदर्श पाठ्यक्रम बनाना

- सर्वप्रथम, इतिहास के संपूर्ण पाठ्यक्रम का विस्तृत अध्ययन करें। साथ ही, पाठ्यक्रम के अनुसार पूर्व में पूछे गए प्रश्नों का अवलोकन करें। इससे यह पता चलता है कि कौन-सा टॉपिक और टॉपिक का कौन-सा भाग महत्त्वपूर्ण है? जो टॉपिक सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण है, अर्थात् जिससे प्राय: प्रत्येक वर्ष किसी-न-किसी रूप में प्रश्न अवश्य पूछे गए हैं, उसे ग्रेड-A में रखें; इसके बाद जिस टॉपिक से ज़्यादा प्रश्न पूछे गए हैं, उसे ग्रेड-B में और सबसे कम पूछे गए प्रश्नों वाले टॉपिक को ग्रेड-C में रखें। इस प्रकार, इन श्रेणियों के अनुसार पाठ्यक्रम को रखते हुए हम अपना एक अलग 'आदर्श पाठ्यक्रम' तैयार कर सकते हैं। इस आदर्श पाठ्यक्रम के अनुसार तैयारी करके आप सफलता की ओर पहला कदम बढ़ा सकते हैं।
- अब सवाल उठता है कि क्या संपूर्ण पाठ्यक्रम का अध्ययन अनिवार्य है या फिर कुछ खंडों को छोड़ा भी जा सकता है? इस संबंध में यह समझ लेना आवश्यक है कि वर्तमान परीक्षा प्रणाली में कुछ टॉपिक्स का अध्ययन कर और कुछ खंडों को छोड़कर सफलता की बात सोचना बेमानी है। अत: तैयारी का एक ही कारगर तरीका हो सकता है, आप कुछ विषयों पर विशेषज्ञतापूर्वक सबकुछ जानते हों और शेष सभी के विषय में कुछ-न-कुछ अवश्य जानते हों (Something about everything and everything about something)। अत: हमें चयन यह नहीं करना है कि क्या पढ़ना है और क्या छोड़ देना है, बल्कि यह करना है कि कितना पाठ्यक्रम विस्तार व गहराई से पढ़ना है और कितना साधारण दृष्टि से।

तैयारी की प्रक्रिया

- संपूर्ण तैयारी की प्रक्रिया प्रश्नपत्र के अनुरूप तीन भागों में बाँटी जा सकती है– 1. मानचित्र आधारित प्रश्न (50 अंक), 2. टिप्पणी आधारित प्रश्न (15 × 10 = 150 अंक), 3. लघु उत्तरीय प्रश्न (300 अंक)।

प्रश्नपत्र-1, खंड 'क' प्राचीन भारत

मानचित्र अध्ययन : यह प्रश्नपत्र का सर्वाधिक अंकदायी एवं सरल प्रश्न है, किंतु इस पर मज़बूत पकड़ बनाने के लिये सूक्ष्म और सतत् अभ्यास की ज़रूरत है।

इस प्रश्न की तैयारी के लिये आपको कक्षा में यू.पी.एस.सी. परीक्षा में मिलने वाले मानचित्र पर अभ्यास कराया जाएगा और लगभग 200 स्थलों के विवरण के साथ उनकी अवस्थिति को भी चिह्नित किया जाएगा।

टिप्पणी आधारित प्रश्न

ऐसी धारणा है कि टिप्पणी की तैयारी नहीं की जा सकती, किंतु यह धारणा निर्मूल है। वास्तविकता तो यह है कि टिप्पणी आधारित प्रश्नों की तैयारी की जाती है और इसके लिये एक विशिष्ट रणनीति की आवश्यकता होती है। कक्षा कार्यक्रम में नियमित रूप से आपको सभी खंडों की टिप्पणी की अलग से तैयारी कराई जाएगी और टिप्पणी लेखन का अभ्यास कराया जाएगा।

दीर्घ एवं लघु उत्तरीय प्रश्न

- सभी खंडों के दीर्घ एवं लघु उत्तरीय प्रश्नों को हल करने के लिये गहन, विश्लेषणात्मक और तार्किक दृष्टि से अध्ययन करने की ज़रूरत होती है।
- इसकी तैयारी के लिये आपको कक्षा में पाठ्यक्रम के अनुसार विभिन्न टॉपिक्स का बिंदुवार विश्लेषण कराया जाएगा। इसके लिये सर्वप्रथम संबंधित अध्याय के पूर्व में पूछे गए प्रश्नों की चर्चा के साथ-साथ इस बात पर भी चर्चा की जाएगी कि उक्त अध्याय से और कितने संभावित प्रश्न बन सकते हैं। तत्पश्चात् कक्षा में अध्याय का बिंदुवार विश्लेषण करते हुए क्लासनोट्स तैयार कराया जाएगा। यह क्लासनोट्स आपको अन्य अभ्यर्थियों से विशिष्ट बनाने में सक्षम होगा।
- दीर्घ एवं लघु उत्तरीय प्रश्नों के उत्तर में कार्य-कारण संबंधों पर आधारित विश्लेषणपरक दृष्टिकोण को विशेष महत्त्व दिया जाता है। आपमें इस दृष्टिकोण का विकास कक्षा में नियमित अभ्यास द्वारा किया जाएगा।

उत्तर-लेखन शैली

- मुख्य परीक्षा में सफलता मूलत: आपकी 'उत्तर-लेखन शैली' पर निर्भर होती है। प्राय: देखने में आता है कि कुछ उम्मीदवार बहुत अच्छी तैयारी करके, परीक्षा में सभी तथ्यों को लिखने के बावजूद अच्छे अंक प्राप्त नहीं कर पाते। इसका प्रमुख कारण उनके द्वारा परीक्षा में पूछे गए प्रश्नों का विश्लेषणात्मक उत्तर न लिखना होता है। दरअसल, मुख्य परीक्षा में तथ्यों की जानकारी की अपेक्षा नहीं, बल्कि तथ्यों के आधार पर प्रश्न के व्यावहारिक विश्लेषण की दरकार होती है।
- इस बात को निम्न उदाहरण के माध्यम से समझा जा सकता है– "उत्तरवैदिक काल में गोत्र बहिर्गमन प्रथा की शुरुआत हुई; यह एक तथ्य है। अब, यदि आप उत्तरवैदिक काल की सामाजिक दशा के तहत महज़ इस तथ्य का उल्लेख करेंगे तो परीक्षक की नज़र में आप सतही परीक्षार्थी का दर्जा पाएँगे; यदि इस तथ्य को लिखने के बाद आप यह भी बताएँ कि गोत्र बहिर्गमन की प्रथा क्यों शुरू हुई; तब आप परीक्षक पर बेहतर प्रभाव छोड़ सकते हैं, जैसे आप यह भी बताएँ कि यह वस्तुत: सामाजिक एवं राजनीतिक संबंधों के विस्तार की एक प्रक्रिया थी। इसके माध्यम से ऐसे व्यक्तियों में संबंध स्थापित होने लगे जो अभी तक एक-दूसरे से अलग थे। इस प्रकार, दूरदराज़ के क्षेत्रों में आर्यों का गमन हुआ।" इस प्रकार के लेखन से परीक्षक को पता चल सकेगा कि परीक्षार्थी की विषय में गहरी तथा उसकी व्यावहारिकता की पूर्ण जानकारी है, इससे आपको अन्य उम्मीदवारों की तुलना में ज़्यादा अंक प्राप्त होंगे।
- उत्तर लेखन में तीन तत्त्व होने आवश्यक हैं– स्पष्टता, क्रमबद्धता एवं प्रामाणिकता।
- लेखन-शैली ऐसी होनी चाहिये कि उत्तर पुस्तिका में आपके और परीक्षक के बीच द्विपक्षीय संबंध विकसित हो जाएँ। इस तरह की लेखन-शैली का विकास कक्षा में कराया जाएगा।
- उत्तर लिखने से पहले उत्तर-प्रारूप अवश्य बनाएँ। इससे समय की बचत तो होगी ही, आपके उत्तर में क्रमबद्धता भी आ सकेगी।
- अपने उत्तर में मानचित्र व आरेखों का भी पर्याप्त समावेश करें।
- 'टिप्पणी' वाले उत्तर को किसी भी स्थिति में निर्धारित शब्द-सीमा से अधिक में न लिखें।
- कक्षा में नियमित रूप से उत्तर-लेखन अभ्यास कराया जाएगा। संपूर्ण कक्षा कार्यक्रम के उपरांत आपकी लेखन-शैली इस प्रकार की हो जाएगी कि आप जटिल-से-जटिल प्रश्नों को भी आसानी से हल करने में पूर्णत: सक्षम होंगे।
- उत्तर-लेखन अभ्यास करते समय इस बात का विशेष ध्यान रखें– प्रश्न को कई बार पढ़ें और प्रश्न के अंत में लिखे निम्न शब्दों पर विशेष ध्यान दें– समीक्षा/आलोचनात्मक मूल्यांकन, विवेचन/विश्लेषण/प्रकाश डालिये।
- **समीक्षा कीजिये–** सबल व निर्बल दोनों पक्षों की विवेचना करनी है।
- **आलोचनात्मक मूल्यांकन कीजिये–** समीक्षा वाला अंश।
- **विश्लेषण कीजिये–** तथ्य के विभिन्न पहलुओं का तुलनात्मक विवेचन करना।
- **प्रकाश डालिये–** विभिन्न पक्षों पर विचार करते हुए उनकी विशिष्टता बताना।
- **विवेचन/व्याख्या–** संबंधित पहलू का सविस्तार वर्णन करना है।

आदर्श पाठ्यक्रम (My Syllabus)

प्राचीन भारत (Ancient India)

Grade 'A'—Topic 1, 3, 5, 7, 10, 12

Grade 'B'—Topic 6, 8, 9

Grade 'C'—Topic 2, 4, 11

मध्यकालीन भारत (Medieval India)

Grade 'A'—Topic 13, 16, 17, 20, 21

Grade 'B'—Topic 14, 19, 22, 23

Grade 'C'—Topic 15, 18, 24

आधुनिक भारत (Modern India)

Grade 'A'—Topic 1, 2, 3, 4, 9

Grade 'B'—Topic 5, 6, 8, 10, 11, 13

Grade 'C'—Topic 7, 12, 14, 15

विश्व इतिहास (World History)

Grade 'A'—Topic 16, 17, 19, 26, 27

Grade 'B'—Topic 18, 21, 22, 23

Grade 'C'—Topic 20, 24, 25

पाठ्यक्रम की अवधि

Ancient India	—	35	140 days
Medieval India	—	30	
Modern India	—	40	
World History India	—	35	

संघ लोक सेवा आयोग (UPSC) एवं उत्तर प्रदेश लोक सेवा आयोग (UPPCS) का पाठ्यक्रम

इतिहास (मुख्य परीक्षा)

प्रश्नपत्र-1

1. **स्रोत (Sources) :**

   पुरातात्त्विक स्रोत :

   अन्वेषण, उत्खनन, पुरालेखविद्या, मुद्राशास्त्र, स्मारक।

   साहित्यिक स्रोत :

   स्वदेशी : प्राथमिक एवं द्वितीयक; कविता, विज्ञान साहित्य, साहित्य, क्षेत्रीय भाषाओं का साहित्य, धार्मिक साहित्य।

   विदेशी वर्णन : यूनानी, चीनी एवं अरब लेखक।

2. **प्रागैतिहास एवं आद्य इतिहास (Pre-history and Proto-history) :** भौगोलिक कारक, शिकार एवं संग्रहण (पुरापाषाण एवं मध्यपाषाण युग), कृषि का आरंभ (नवपाषाण एवं ताम्रपाषाण युग)।

3. **सिंधु घाटी सभ्यता (Indus Valley Civilization) :** उद्गम, काल, विस्तार, विशेषताएँ, पतन, अस्तित्व एवं महत्त्व, कला एवं स्थापत्य।

4. **महापाषाणयुगीन संस्कृतियाँ (Megalithic Cultures) :** सिंधु से बाहर पशुचारण एवं कृषि संस्कृतियों का विस्तार, सामुदायिक जीवन का विकास, बस्तियाँ, कृषि का विकास, शिल्पकर्म, मृदभाँड एवं लौह उद्योग।

5. **आर्य एवं वैदिक काल (Aryans and Vedic Period) :** भारत में आर्यों का प्रसार। **वैदिक काल :** धार्मिक एवं दार्शनिक साहित्य; ऋग्वैदिक काल से उत्तर वैदिक काल तक हुए रूपांतरण; राजनीतिक, सामाजिक एवं आर्थिक जीवन; वैदिक युग का महत्त्व; राजतंत्र एवं वर्ण व्यवस्था का क्रम विकास।

6. **महाजनपद काल (Period of Mahajanapadas) :** महाजनपदों का निर्माण : गणतंत्रीय एवं राजतंत्रीय; नगर केंद्रों का उद्भव, व्यापार मार्ग, आर्थिक विकास, टंकण (सिक्का ढलाई), जैन धर्म एवं बौद्ध धर्म का प्रसार, मगधों एवं नंदों का उद्भव।

   ईरानी एवं मकदूनियाई आक्रमण एवं उनके प्रभाव।

7. **मौर्य साम्राज्य (Mauryan Empire) :** मौर्य साम्राज्य की नींव, चंद्रगुप्त, कौटिल्य और अर्थशास्त्र; अशोक; धर्म की संकल्पना; धर्मादेश; राज्य व्यवस्था; प्रशासन; अर्थ-व्यवस्था; कला, स्थापत्य एवं मूर्तिशिल्प; विदेशी संपर्क; धर्म; धर्म का प्रसार; साहित्य। साम्राज्य का विघटन; शुंग एवं कण्व।

8. **उत्तर मौर्य काल (भारत-यूनानी, शक, कुषाण, पश्चिमी क्षत्रप) [Post-Mauryan Period (Indo-Greeks, Sakas, Kushanas, Western Kshatrapas)] :** बाहरी विश्व से संपर्क; नगर-केंद्रों का विकास, अर्थव्यवस्था, टंकण, धर्मों का विकास, महायान, सामाजिक दशाएँ, कला, स्थापत्य, संस्कृति, साहित्य एवं विज्ञान।

9. **प्रारंभिक राज्य एवं समाज; पूर्वी भारत, दकन एवं दक्षिण भारत में (Early State and Society in Eastern India, Deccan and South India) :** खारवेल, सातवाहन, संगमकालीन तमिल राज्य; प्रशासन, अर्थव्यवस्था, भूमि-अनुदान, टंकण, व्यापारिक श्रेणियाँ एवं नगर केंद्र; बौद्ध केंद्र, संगम साहित्य एवं संस्कृति, कला एवं स्थापत्य।

10. **गुप्त वंश, वाकाटक एवं वर्द्धन वंश (Guptas, Vakatakas and Vardhanas) :** राज्य व्यवस्था एवं प्रशासन, आर्थिक दशाएँ, गुप्तकालीन टंकण, भूमि अनुदान, नगर केंद्रों का पतन, भारतीय सामंतशाही, जाति प्रथा, स्त्री की स्थिति, शिक्षा एवं शैक्षिक संस्थाएँ, नालंदा, विक्रमशिला एवं वल्लभी, साहित्य, विज्ञान साहित्य, कला एवं स्थापत्य।

11. **गुप्तकालीन क्षेत्रीय राज्य (Regional States during Gupta Era) :** कदंब वंश, पल्लव वंश, बादामी का चालुक्य वंश; राज्य व्यवस्था एवं प्रशासन, व्यापारिक श्रेणियाँ, साहित्य; वैष्णव एवं शैव धर्मों का विकास; तमिल भक्ति आंदोलन, शंकराचार्य; वेदांत; मंदिर संस्थाएँ एवं मंदिर स्थापत्य; पाल वंश, सेन वंश, राष्ट्रकूट वंश, परमार वंश, राज्य व्यवस्था एवं प्रशासन, सांस्कृतिक पक्ष, सिंध के अरब विजेता; अलबरूनी, कल्याणी का चालुक्य वंश, चोल वंश, होयसल वंश, पांड्य वंश, राज्य व्यवस्था एवं प्रशासन; स्थानीय शासन; कला एवं स्थापत्य का विकास, धार्मिक संप्रदाय, मंदिर एवं मठ संस्थाएँ, अग्रहार वंश, शिक्षा एवं साहित्य, अर्थव्यवस्था एवं समाज।

12. **प्रारंभिक भारतीय सांस्कृतिक इतिहास के प्रतिपाद्य (Themes in Early Indian Cultural History) :** भाषाएँ एवं मूलग्रंथ, कला एवं स्थापत्य के क्रम विकास के प्रमुख चरण, प्रमुख दार्शनिक चिंतक एवं शाखाएँ, विज्ञान एवं गणित के क्षेत्र के विचार।

13. **प्रारंभिक मध्यकालीन भारत, 750-1200 (Early Medieval India, 750-1200) :**
    - राज्य व्यवस्था : उत्तरी भारत एवं प्रायद्वीप में प्रमुख राजनीतिक घटनाक्रम, राजपूतों का उद्गम एवं उदय।
    - चोल वंश : प्रशासन, ग्रामीण अर्थव्यवस्था एवं समाज
    - भारतीय सामंतशाही
    - कृषि अर्थव्यवस्था एवं नगरीय बस्तियाँ

- व्यापार एवं वाणिज्य
- समाज : ब्राह्मण की स्थिति एवं नई सामाजिक व्यवस्था
- स्त्री की स्थिति
- भारतीय विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी

14. भारत की सांस्कृतिक परंपरा, 750-1200 (Cultural Traditions in India, 750-1200) :

- दर्शन : शंकराचार्य एवं वेदांत, रामानुज एवं विशिष्टाद्वैत, मध्व एवं ब्रह्म-मीमांसा।
- धर्म : धर्म के स्वरूप एवं विशेषताएँ, तमिल भक्ति संप्रदाय, भक्ति का विकास, इस्लाम एवं भारत में इसका आगमन, सूफी मत।
- साहित्य : संस्कृत साहित्य, तमिल साहित्य का विकास, नवविकासशील भाषाओं का साहित्य, कल्हण की राजतरंगिणी, अलबरूनी का भारत।
- कला एवं स्थापत्य : मंदिर स्थापत्य, मूर्तिशिल्प, चित्रकला।

15. तेरहवीं शताब्दी (The Thirteenth Century) :

- दिल्ली सल्तनत की स्थापना : गोरी के आक्रमण-गोरी की सफलता के पीछे कारक।
- आर्थिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिणाम।
- दिल्ली सल्तनत की स्थापना एवं प्रारंभिक तुर्क सुल्तान।
- सुदृढ़ीकरण : इल्तुतमिश और बलबन का शासन।

16. चौदहवीं शताब्दी (The Fourteenth Century) :

- खिलजी क्रांति
- अलाउद्दीन खिलजी : विजय एवं क्षेत्र-प्रसार, कृषि एवं आर्थिक उपाय।
- मुहम्मद तुगलक : प्रमुख प्रकल्प (Project), कृषि उपाय, मुहम्मद तुगलक की अफसरशाही।
- फिरोज़ तुगलक : कृषि उपाय, सिविल इंजीनियरी एवं लोक निर्माण में उपलब्धियाँ, दिल्ली सल्तनत का पतन, विदेशी संपर्क एवं इब्नबतूता का वर्णन।

17. तेरहवीं और चौदहवीं शताब्दी का समाज, संस्कृति एवं अर्थव्यवस्था (Society, Culture and Economy in the Thirteenth and Fourteenth Centuries) :

- समाज; ग्रामीण समाज की रचना : शासी वर्ग, नगर निवासी, स्त्री, धार्मिक वर्ग, सल्तनत के अंतर्गत जाति एवं दास प्रथा, भक्ति आंदोलन, सूफी आंदोलन।
- संस्कृति : फारसी साहित्य, उत्तर भारत की क्षेत्रीय भाषाओं का साहित्य; दक्षिण भारत की भाषाओं का साहित्य; सल्तनत स्थापत्य एवं नए स्थापत्य रूप, चित्रकला, सम्मिश्र संस्कृति का विकास।
- अर्थव्यवस्था : कृषि उत्पादन, नगरीय अर्थव्यवस्था एवं कृषित्तर उत्पादन का उद्भव, व्यापार एवं वाणिज्य।

18. पंद्रहवीं एवं प्रारंभिक सोलहवीं शताब्दी – राजनीतिक घटनाक्रम एवं अर्थव्यवस्था (The Fifteenth and Early Sixteenth Century-Political Developments and Economy) :

- प्रांतीय राजवंशों का उदय: बंगाल, कश्मीर (जैनुल आबदीन), गुजरात, मालवा, बहमनी।
- विजयनगर साम्राज्य
- लोदी वंश
- मुगल साम्राज्य, पहला चरण : बाबर एवं हुमायूँ
- सूर साम्राज्य : शेरशाह का प्रशासन
- पुर्तगाली औपनिवेशिक प्रतिष्ठान

19. पंद्रहवीं एवं प्रारंभिक सोलहवीं शताब्दी – समाज एवं संस्कृति (The Fifteenth and Early Sixteenth Century-Society and Culture) :

- क्षेत्रीय सांस्कृतिक विशिष्टताएँ
- साहित्यिक परंपराएँ
- प्रांतीय स्थापत्य
- विजयनगर साम्राज्य का समाज, संस्कृति, साहित्य और कला।

20. अकबर (Akbar) :

- विजय एवं साम्राज्य का सुदृढ़ीकरण
- जागीर एवं मनसब व्यवस्था की स्थापना
- राजपूत नीति
- धार्मिक एवं सामाजिक दृष्टिकोण का विकास, सुलह-ए-कुल का सिद्धांत एवं धार्मिक नीति
- कला एवं प्रौद्योगिकी को राजदरबारी संरक्षण।

21. सत्रहवीं शताब्दी में मुगल साम्राज्य (Mughal Empire in the Seventeenth Century) :

- जहाँगीर, शाहजहाँ एवं औरंगज़ेब की प्रमुख प्रशासनिक नीतियाँ
- साम्राज्य एवं ज़मींदार।
- जहाँगीर, शाहजहाँ एवं औरंगज़ेब की धार्मिक नीतियाँ
- मुगल राज्य का स्वरूप
- उत्तर सत्रहवीं शताब्दी का संकट एवं विद्रोह
- अहोम साम्राज्य
- शिवाजी एवं प्रारंभिक मराठा राज्य।

22. **सोलहवीं एवं सत्रहवीं शताब्दी में अर्थव्यवस्था एवं समाज (Economy and Society in the 16th and 17th Centuries) :**
    - जनसंख्या, कृषि उत्पादन, शिल्प उत्पादन
    - नगर, डच, अंग्रेज़ी एवं फ्राँसीसी कंपनियों के माध्यम से यूरोप के साथ वाणिज्य : व्यापार क्रांति।
    - भारतीय व्यापारी वर्ग, बैंकिंग, बीमा एवं ऋण प्रणालियाँ
    - किसानों की दशा, स्त्रियों की दशा
    - सिख समुदाय एवं खालसा पंथ का विकास
23. **मुगल साम्राज्यकालीन संस्कृति (Culture during Mughal Empire) :**
    - फारसी इतिहास एवं अन्य साहित्य
    - हिंदी एवं अन्य धार्मिक साहित्य
    - मुगल स्थापत्य
    - मुगल चित्रकला
    - प्रांतीय स्थापत्य एवं चित्रकला
    - शास्त्रीय संगीत
    - विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी
24. **अठारहवीं शताब्दी (The Eighteenth Century) :**
    - मुगल साम्राज्य के पतन के कारक
    - क्षेत्रीय सामंत देश : निज़ाम का दकन, बंगाल, अवध
    - पेशवा के अधीन मराठा उत्कर्ष
    - मराठा राजकोषीय एवं वित्तीय व्यवस्था
    - अफगान शक्ति का उदय, पानीपत का युद्ध-1761
    - ब्रिटिश विजय की पूर्व संध्या में राजनीति, संस्कृति एवं अर्थव्यवस्था की स्थिति।

प्रश्नपत्र-2

1. **भारत में यूरोप का प्रवेश (European Penetration into India) :** प्रारंभिक यूरोपीय बस्तियाँ; पुर्तगाली एवं डच, अंग्रेज़ी एवं फ्राँसीसी ईस्ट इंडिया कंपनियाँ; आधिपत्य के लिये उनके युद्ध; कर्नाटक युद्ध; बंगाल– अंग्रेज़ों एवं बंगाल के नवाब के बीच संघर्ष; सिराज और अंग्रेज़; प्लासी का युद्ध; प्लासी का महत्त्व।
2. **भारत में ब्रिटिश प्रसार (British Expansion in India) :** बंगाल– मीर जाफर एवं मीर कासिम; बक्सर युद्ध; मैसूर, मराठा; तीन अंग्रेज़-मराठा युद्ध; पंजाब।
3. **ब्रिटिश राज्य की प्रारंभिक संरचना (Early Structure of the British Raj) :** प्रारंभिक प्रशासनिक संरचना; द्वैधशासन से प्रत्यक्ष नियंत्रण तक; रेगुलेटिंग एक्ट (1773); पिट्स इंडिया एक्ट (1784); चार्टर एक्ट (1833); मुक्त व्यापार का स्वर एवं ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन का बदलता स्वरूप; अंग्रेज़ी उपयोगितावादी और भारत।
4. **ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन का आर्थिक प्रभाव (Economic Impact of British Colonial Rule) :**
    - ब्रिटिश भारत में भूमि– राजस्व बंदोबस्त; स्थायी बंदोबस्त; रैयतवाड़ी बंदोबस्त; महालवाड़ी बंदोबस्त; राजस्व प्रबंध का आर्थिक प्रभाव; कृषि का वाणिज्यीकरण; भूमिहीन कृषि श्रमिकों का उदय; ग्रामीण समाज का परिक्षीणन।
    - पारंपरिक व्यापार एवं वाणिज्य का विस्थापन; अनौद्योगीकरण; पारंपरिक शिल्प की अवनति; धन का अपवाह; भारत का आर्थिक रूपांतरण; टेलीग्राफ एवं डाक सेवाओं समेत रेल पथ एवं संचार जाल; ग्रामीण भीतरी प्रदेश में दुर्भिक्ष एवं गरीबी; यूरोपीय व्यापार उद्यम एवं इसकी सीमाएँ।
5. **सामाजिक एवं सांस्कृतिक विकास (Social and Cultural Developments) :** स्वदेशी शिक्षा की स्थिति; इसका विस्थापन; प्राच्यविद्-आंग्लविद् विवाद, भारत में पश्चिमी शिक्षा का प्रादुर्भाव; प्रेस, साहित्य एवं लोकमत का उदय; आधुनिक मातृभाषा साहित्य का उदय; विज्ञान की प्रगति; भारत में क्रिश्चियन मिशनरी के कार्यकलाप।
6. **बंगाल एवं अन्य क्षेत्रों में सामाजिक एवं धार्मिक सुधार आंदोलन (Social and Religious Reform Movements in Bengal and Other Areas) :** राममोहन राय, ब्रह्म आंदोलन; देवेंद्रनाथ टैगोर; ईश्वरचंद्र विद्यासागर; युवा बंगाल आंदोलन; दयानंद सरस्वती; भारत में सती प्रथा, विधवा विवाह, बाल विवाह आदि समेत सामाजिक सुधार आंदोलन; आधुनिक भारत के विकास में भारतीय पुनर्जागरण का योगदान; इस्लामी पुनरुद्धार वृत्ति– फराइजी एवं वहाबी आंदोलन।
7. **ब्रिटिश शासन के प्रति भारत की अनुक्रिया (Indian Response to British Rule) :** रंगपुर ढींग (1783), कोल विद्रोह (1832), मालाबार में मोपला विद्रोह (1841-1920), संथाल हुल (1855), नील विद्रोह (1859-60), दकन विप्लव (1875) एवं मुंडा उल्गुलान (1899-1900) समेत 18वीं एवं 19वीं शताब्दी में हुए किसान आंदोलन एवं जनजातीय विप्लव; 1857 का महाविद्रोह– उद्गम, स्वरूप, असफलता के कारण, परिणाम; पश्च 1857 काल में किसान विप्लव के स्वरूप में बदलाव; 1920 और 1930 के दशकों में हुए किसान आंदोलन।
8. **भारतीय राष्ट्रवाद के जन्म के कारक (Factors leading to the Birth of Indian Nationalism) :** संघों की राजनीति; भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की बुनियाद; कांग्रेस के जन्म के

संबंध में सेफ्टी वाल्व का पक्ष; प्रारंभिक कांग्रेस के कार्यक्रम एवं लक्ष्य; प्रारंभिक कांग्रेस नेतृत्व की सामाजिक रचना; नरम दल एवं गरम दल; बंगाल का विभाजन (1905); बंगाल में स्वदेशी आंदोलन; स्वदेशी आंदोलन के आर्थिक एवं राजनीतिक परिप्रेक्ष्य; भारत में क्रांतिकारी उग्रपंथ का आरंभ।

9. **गांधी का उदय (Rise of Gandhi) :** गांधी के राष्ट्रवाद का स्वरूप; गांधी का जनाकर्षण; रौलेट सत्याग्रह; खिलाफत आंदोलन; असहयोग आंदोलन समाप्त होने के बाद से सविनय अवज्ञा आंदोलन के प्रारंभ होने तक की राष्ट्रीय राजनीति; सविनय अवज्ञा आंदोलन के दो चरण; साइमन कमीशन; नेहरू रिपोर्ट; गोलमेज़ परिषद्; राष्ट्रवाद और किसान आंदोलन; राष्ट्रवाद एवं श्रमिक वर्ग आंदोलन; महिला एवं भारतीय युवा और भारतीय राजनीति में छात्र (1885-1947); 1937 का चुनाव तथा मंत्रालयों का गठन; क्रिप्स मिशन; भारत छोड़ो आंदोलन; वैवेल योजना; कैबिनेट मिशन।

10. **औपनिवेशिक :** भारत में 1858 और 1935 के बीच सांविधानिक घटनाक्रम (Constitutional Developments in the Colonial India between 1858 and 1935)।

11. **राष्ट्रीय आंदोलन की अन्य कड़ियाँ (Other Strands in the National Movement) :** क्रांतिकारी; बंगाल, पंजाब, महाराष्ट्र, यू.पी., मद्रास प्रदेश, भारत से बाहर। वामपक्ष; कांग्रेस के अंदर का वामपक्ष : जवाहरलाल नेहरू, सुभाषचंद्र बोस, कांग्रेस समाजवादी पार्टी, भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी, अन्य वाम दल।

12. **अलगाववाद की राजनीति (Politics of Separatism) :** मुस्लिम लीग; हिंदू महासभा; सांप्रदायिकता एवं विभाजन की राजनीति; सत्ता का हस्तांतरण; स्वतंत्रता।

13. **एक राष्ट्र के रूप में सुदृढ़ीकरण (Consolidation as a Nation):** नेहरू की विदेश नीति; भारत और उसके पड़ोसी (1947-1964); राज्यों का भाषावाद पुनर्गठन (1935-1947); क्षेत्रीयतावाद एवं क्षेत्रीय असमानता; भारतीय रियासतों का एकीकरण; निर्वाचन की राजनीति में रियासतों के नरेश (प्रिंस); राष्ट्रीय भाषा का प्रश्न।

14. **1947 के बाद जाति एवं नृजातित्व (Caste and Ethnicity after 1947) :** उत्तर-औपनिवेशिक निर्वाचन- राजनीति में पिछड़ी जातियाँ एवं जनजातियाँ; दलित आंदोलन।

15. **आर्थिक विकास एवं राजनीतिक परिवर्तन (Economic Development and Political Change) :** भूमि सुधार; योजना एवं ग्रामीण पुनर्रचना की राजनीति; उत्तर औपनिवेशिक भारत में पारिस्थितिकी एवं पर्यावरण नीति; विज्ञान की तरक्की।

16. **प्रबोध एवं आधुनिक विचार (Enlightenment and Modern Ideas) :**
- प्रबोध के प्रमुख विचार : कांट, रूसो
- उपनिवेशों में प्रबोध - प्रसार
- समाजवादी विचारों का उदय (मार्क्स तक); मार्क्स के समाजवाद का प्रसार

17. **आधुनिक राजनीति के मूल स्रोत (Origins of Modern Politics) :**
- यूरोपीय राज्य प्रणाली
- अमेरिकी क्रांति एवं संविधान
- फ्राँसीसी क्रांति एवं उसके परिणाम, 1789-1815
- अब्राहम लिंकन के संदर्भ के साथ अमेरिकी सिविल युद्ध एवं दासता का उन्मूलन
- ब्रिटिश गणतंत्रात्मक राजनीति, 1815-1850; संसदीय सुधार, मुक्त व्यापारी, चार्टरवादी।

18. **औद्योगीकरण (Industrialization) :**
- अंग्रेज़ी औद्योगिक क्रांति : कारण एवं समाज पर प्रभाव।
- अन्य देशों में औद्योगीकरण : यू.एस.ए., जर्मनी, रूस, जापान।
- औद्योगीकरण एवं भूमंडलीकरण।

19. **राष्ट्र-राज्य प्रणाली (Nation-State System) :**
- 19वीं शताब्दी में राष्ट्रवाद का उदय
- राष्ट्रवाद : जर्मनी और इटली में राज्य निर्माण।
- पूरे विश्व में राष्ट्रीयता के आविर्भाव के समक्ष साम्राज्यों का विघटन।

20. **साम्राज्यवाद एवं उपनिवेशवाद (Imperialism and Colonialism):**
- दक्षिण एवं दक्षिण-पूर्व एशिया
- लातिनी अमेरिका एवं दक्षिण अफ्रीका
- ऑस्ट्रेलिया
- साम्राज्यवाद एवं मुक्त व्यापार : नवसाम्राज्यवाद का उदय।

21. **क्रांति एवं प्रतिक्रांति (Revolution and Counter-Revolution):**
- 19वीं शताब्दी की यूरोपीय क्रांतियाँ

- 1917-1921 की रूसी क्रांति
- फासीवाद प्रतिक्रांति, इटली एवं जर्मनी
- 1949 की चीनी क्रांति

22. विश्व युद्ध (World Wars) :

- संपूर्ण युद्ध के रूप में प्रथम एवं द्वितीय विश्व युद्ध : समाजीय निहितार्थ
- प्रथम विश्व युद्ध : कारण एवं परिणाम
- द्वितीय विश्व युद्ध : कारण एवं परिणाम

23. द्वितीय विश्व युद्ध के बाद का विश्व (The World after World War II) :

- दो शक्तियों का आविर्भाव
- तृतीय विश्व एवं गुटनिरपेक्षता का आर्विभाव
- संयुक्त राष्ट्रसंघ एवं वैश्विक विवाद

24. औपनिवेशिक शासन से मुक्ति (Liberation from Colonial Rule) :

- लातिनी अमेरिका – बोलिवर
- अरब विश्व – मिस्र
- अफ्रीका – रंगभेद से गणतंत्र तक
- दक्षिण-पूर्व एशिया – वियतनाम

25. वि-औपनिवेशीकरण एवं अल्पविकास (Decolonization and Underdevelopment) :

- विकास के बाधक कारक : लातिनी अमेरिका, अफ्रीका।

26. यूरोप का एकीकरण (Unification of Europe) :

- युद्धोत्तर स्थापनाएँ NATO एवं यूरोपीय समुदाय (यूरोपियन कम्युनिटी)
- यूरोपीय समुदाय (यूरोपियन कम्युनिटी) का सुदृढ़ीकरण एवं प्रसार
- यूरोपीय संघ

27. सोवियत यूनियन का विघटन एवं एक ध्रुवीय विश्व का उदय (Disintegration of Soviet Union and the Rise of the Unipolar World) :

- सोवियत साम्यवाद एवं सोवियत यूनियन को निपात तक पहुँचाने वाले कारक, 1985-1991
- पूर्वी यूरोप में राजनीतिक परिवर्तन 1989-2001
- शीत युद्ध का अंत एवं अकेली महाशक्ति के रूप में US का उत्कर्ष।

❑❑❑

अध्यापक परिचय

विगत डेढ़ दशक से सिविल सेवा अभ्यर्थियों के बीच वैकल्पिक विषय इतिहास और सामान्य अध्ययन के पाठ्यक्रम में सम्मिलित इतिहास के विभिन्न खंडों के अध्यापन के लिये देश भर में सर्वाधिक लोकप्रिय एवं भरोसेमंद नाम है- **श्री अखिल मूर्ति**।

श्री अखिल मूर्ति

तथ्यों की अधिकता की वजह से, विशेषकर गैर-मानविकी पृष्ठभूमि वाले अभ्यर्थियों के लिये वैकल्पिक विषय और सामान्य अध्ययन के एक खंड के रूप में इतिहास प्रायः उपेक्षित एवं अरुचिकर विषय रहा है। परंतु, इतिहास के प्रति अरुचि रखने वाला कोई विद्यार्थी यदि श्री अखिल मूर्ति की दो कक्षाएँ भी कर ले तो इस बात पर पूर्ण विश्वास है कि इतिहास के प्रति उसकी अरुचि संबंधी सभी धारणाएँ निर्मूल साबित हो जाएंगी।

इतिहास विषय के लिये सिविल सेवा परीक्षार्थियों के बीच सर्वाधिक लोकप्रिय एवं विश्वसनीय मार्गदर्शक के रूप में स्थापित श्री अखिल मूर्ति, विगत डेढ़ दशक से सिविल सेवा अभ्यर्थियों का मार्गदर्शन कर रहे हैं। अपनी सहज अध्यापन शैली के माध्यम से श्री अखिल मूर्ति, इतिहास और कला-संस्कृति जैसे जटिल प्रकृति वाले विषयों को भी विद्यार्थियों के लिये अत्यंत सहज बना देते हैं।

सिविल सेवा परीक्षा की तैयारी के लिये, हिंदी माध्यम में इतिहास विषय की स्तरीय एवं परीक्षोपयोगी पाठ्य पुस्तकों की कमी को दूर करने के लिये श्री अखिल मूर्ति ने भारतीय इतिहास (प्रारंभिक एवं मुख्य परीक्षा) एवं विश्व इतिहास से संबंधित कई पुस्तकें भी लिखी हैं। विश्व इतिहास और आधुनिक भारत पर लिखी उनकी पुस्तकें आज सिविल सेवा परीक्षा एवं विभिन्न राज्यों की पी.सी.एस. परीक्षाओं की तैयारी के लिये सर्वाधिक भरोसेमंद स्रोत के रूप में पढ़ी जाती हैं।

वर्तमान में वह दिल्ली स्थित संस्कृति IAS के प्रबंध निदेशक हैं।

संस्कृति IAS
अखिल मूर्ति के निर्देशन में
श्री अखिल मूर्ति
इतिहास
कला एवं संस्कृति
श्री अमित कुमार सिंह
(IGNITED MINDS)
एथिक्स
श्री ए.के. अरुण
भारतीय अर्थव्यवस्था
श्री सीबीपी श्रीवास्तव
(DISCOVERY IAS)
राजव्यवस्था, सामाजिक न्याय
गवर्नेंस, आंतरिक सुरक्षा
श्री कुमार गौरव
भूगोल, पर्यावरण
आपदा प्रबंधन
श्री राजेश मिश्रा
भारतीय राजव्यवस्था
अंतर्राष्ट्रीय संबंध
श्री रीतेश आर जायसवाल
सामान्य विज्ञान
विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी
श्री विकास रंजन
(TRIUMPH IAS)
सामाजिक मुद्दे
सामान्य अध्ययन
फाउंडेशन कोर्स
(प्रिलिम्स+मेन्स)
वैकल्पिक विषय
इतिहास
द्वारा – अखिल मूर्ति
दर्शन शास्त्र
द्वारा – अमित कुमार सिंह
भूगोल
द्वारा – कुमार गौरव
राजनीति विज्ञान
द्वारा – राजेश मिश्रा
सीसैट
कुल कक्षाएँ
120+
नियमित रिवीज़न
हेड ऑफिस
636, भू-तल,
मुखर्जी नगर, दिल्ली-09
9555-124-124
sanskritiIAS.com
प्रयागराज केंद्र
7/3/AA/1, ताशकंद मार्ग,
पत्रिका चौराहा, प्रयागराज, उ.प्र.